Samyak

An Institute For Civil Services

आधुनिक भारत का इतिहास

Samyak
An Institute For Civil Services

अनुक्रमणिका

अध्याय	विवरण	पेज संख्या
1.	यूरोपियनों का आगमन	01-08
2.	भारत में मुगलों का पतन और अंग्रेजों का विस्तार	09-14
3.	किसान, नागरिक और जनजातीय आंदोलन	15-21
4.	1857 की क्रान्ति	22-27
5.	सामाजिक-धार्मिक आंदोलन	28-35
6.	भारत में राष्ट्रवाद	36-43
7.	भारत में क्रांतिकारी राष्ट्रवाद	44-52
8.	राष्ट्रीय आंदोलन में गांधीवादी चरण	53-57
9.	राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम (1919- 1938)	58-73
10.	भारतीय स्वतंत्रता संग्राम (1939-1947)	74-84
11.	परिशिष्ट	85-97

अध्याय -1 यूरोपियनों का आगमन

यूरोप में 15वीं सदी भूमि और समुद्री मार्गों की भौगोलिक खोजों का समय था। क्रिस्टोफर कोलंबस, एक इतालवी खोजकर्ता ने 1492 में अमेरिका की खोज की, जबकि वास्को दा गामा, एक पुर्तगाली खोजकर्ता ने 1498 में यूरोप से भारत तक एक नया समुद्री मार्ग खोजा। इस खोज के बाद, पूरे यूरोप से विभिन्न व्यापारिक कंपनियों ने भारत में अपनी स्थापना की। यूरोपीय विभिन्न चरणों में भारत पहुंचे।

पुर्तगाली ➡ डच ➡ अंग्रेज़ ➡ डेनिश ➡ फ्रांसीसी

पुर्तगाली

नाम	कार्य	महत्व
वास्को डी गामा	• 1498 में वे कालीकट पहुंचे। ज़मोरिन के हिंदू शासक ने उनका स्वागत किया। • 1502 तक, उनकी दूसरी यात्रा के परिणामस्वरूप कैनानोर, कालीकट और कोचीन में वाणिज्यिक चौकियों का निर्माण हुआ, साथ ही उनकी किलेबंदी भी हुई।	• अन्य व्यापारियों के विपरीत, पुर्तगाल भारत में सभी व्यापार को नियंत्रित करने की आकांक्षा रखता था। • वास्को डी गामा ने 1501 में भारत की अपनी दूसरी यात्रा की और कन्नानोर में एक कारखाना स्थापित किया। • अरबों के प्रतिरोध के बावजूद पुर्तगाली कालीकट, कोचीन और कन्नानोर में अपने व्यापारिक केंद्र स्थापित करने में सफल रहे।
पेद्रो अल्वारेज कैब्रल (1500)	• 1500 में कालीकट में पहली फैक्ट्री बनाई गई।	• भारतीय उपमहाद्वीप पर यूरोपीय शासन का युग प्रारम्भ हुआ।
फ्रांसिस्को डी अल्मेडा (1505-09) 1509 में, अल्मेडा ने मिस्रियों और उनके भारतीय सहयोगियों को हराया।	• ब्लू वाटर पॉलिसी (कार्टेज़ सिस्टम) की शुरुआत की थी। • पुर्तगालियों ने कार्टेज़ सिस्टम का इस्तेमाल किया, जो उचित सरकार द्वारा जारी किया जाने वाला समुद्री व्यापार परमिट था, ताकि विदेशियों को भारत में व्यापार करने से रोका जा सके। •	• प्रथम वायसराय, फ्रांसिस्को डी अल्मेडा को 1505 में चुना गया, और उन्होंने कोचीन में निवास स्थापित किया। • दीव के तट पर
अफोंसो दे अल्बुकर्की या कई बार अफोंसो दे अल्बुकर्क (1509-1515)	• 1509 में, अल्बुकर्क को भारत में पुर्तगाली क्षेत्रों का गवर्नर बनाया गया। • हिंद महासागर पर रणनीतिक नियंत्रण प्राप्त किया। • बीजापुर के शासकों से गोवा छीन लिया। • विजयनगर के श्री कृष्णदेव राय से भटकल को जब्त किया (1510)। • भारत में रहने और स्थानीय लोगों से शादी करने की प्रथा शुरू की, साथ ही जहाँ उनके पास अधिकार था, वहाँ सती प्रथा को गैरकानूनी घोषित किया।	• उन्हें भारत में पुर्तगाली प्रभुत्व स्थापित करने वाले व्यक्ति के रूप में माना जाता है। • 'साम्राज्यवाद की नीति' सर्वप्रथम उनके द्वारा प्रस्तुत की गई। • सत्ता में अपने संक्षिप्त समय के दौरान, उनकी नीति के मूल उद्देश्य - व्यापार मार्गों और मसालों के स्रोतों पर नियंत्रण - लगभग प्राप्त हो गए थे। • अल्बुकर्क के उत्तराधिकारियों द्वारा पुर्तगाली बस्तियों की स्थापना की गई थी।
नीनो-डी-कुन्हा (1529-38)	• 1530 में उन्होंने राजधानी कोचीन से गोवा स्थानांतरित कर दी। • उन्होंने गुजरात के शासक बहादुर शाह को दीव और बेसिन से खदेड़ दिया। • उन्होंने बंगाल के हुगली में अपना मुख्यालय बनाया।	• व्यावहारिक शासक जिसने अपना साम्राज्य पश्चिमी तटीय क्षेत्र से आगे बढ़ाया। उनके शासनकाल के दौरान, पुर्तगाली अधिकार पूर्वी तट तक पहुँच गया।

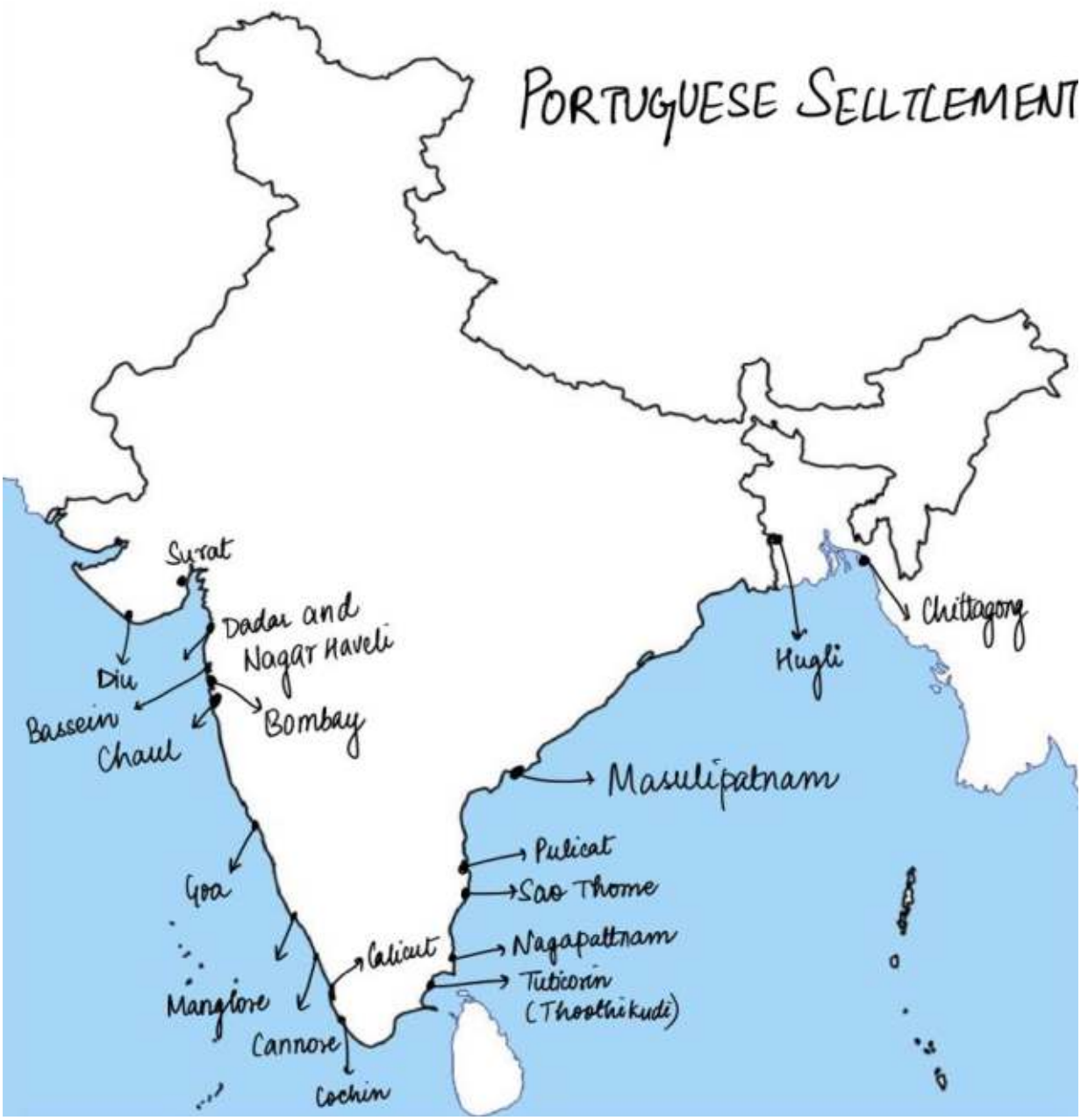
PORTUGUESE SELLTLEMENT
Surat
Dadar and Nagar Haveli
Diu
Bassein
Chaul
Bombay
Goa
Manglore
Cannore
Cochin
Calicut
Masulipatnam
Pulicat
Sao Thome
Nagapattnam
Tuticorin (Thoothikudi)
Hugli
Chittagong

पुर्तगालियों हेतु अनुकूल स्थितियाँ
निपुण:
वे कुशल नाविक, व्यापारी और राजनीतिज्ञ थे।
चीनी भय नहीं:
चीनियों को भारत पर आक्रमण करने से प्रतिबंधित कर दिया गया था, उनके अलावाकोई अन्य महाशक्तियाँ नहीं थीं।
सैन्य विकास:
16वीं शताब्दी में, पुर्तगाली, जो आग्नेयास्त्रों, और शारीरिक कवच रखने के आदी थे, सेना के विकास का प्रदर्शन करते हुए, मालाबार में जहाजों से पहुंचे।
दृष्टिकोण:
उद्योग पर एकाधिकार सुनिश्चित करने की प्रारंभिक रणनीति में पुर्तगाली जहाजों को हथियारों से लैस करना शामिल था, ताकि खतरा उत्पन्न होने की स्थिति में उन्हें तैयार रखा जा सके।
समुद्री पहुँच:
उत्कृष्ट जहाज और तोप से सुसज्जित बेड़ा (अन्य छोटे राज्यों की तुलना में कहीं बेहतर)।
अरबियों का पिछड़ापन:
मिस्र और मध्य पूर्व में लकड़ी की कमी थी और वे जहाज़ों का निर्माण करने में असमर्थ थे।

Notes:

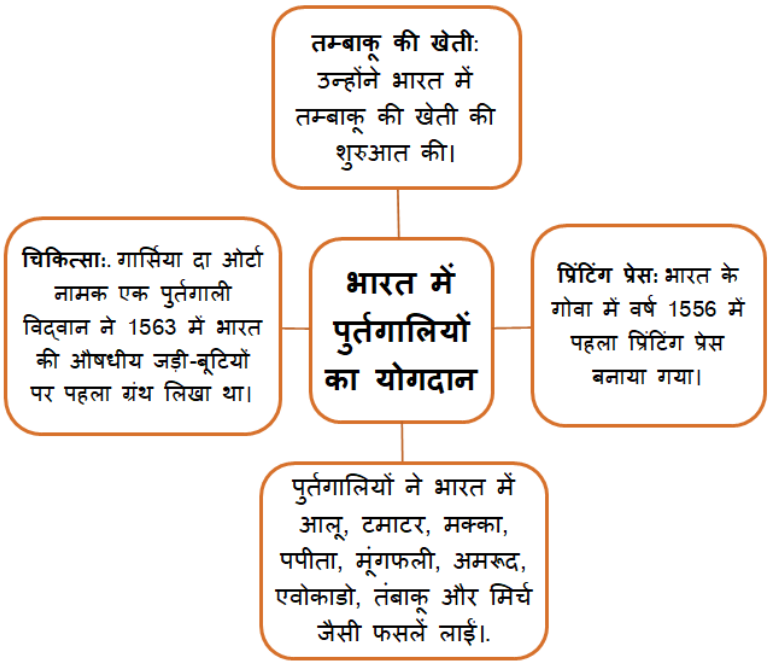

डच

- **शुरुआत:** डच अपने व्यापारिक हितों के कारण पूर्व की ओर यात्रा करते थे। सुमात्रा और बैंटम की यात्रा करने वाले पहले डचमैन कॉर्नेलिस डी हाउटमैन थे, जिन्होंने 1596 में यात्रा की थी।
- **डच संसद का चार्टर (1602):** मार्च 1602 में डच संसद के चार्टर ने नीदरलैंड की यूनाइटेड ईस्ट इंडिया कंपनी की स्थापना की, जिसके पास युद्ध की घोषणा करने, संधियों पर हस्ताक्षर करने और किले बनाने का अधिकार था।
- **बस्तियाँ:**

Notes:

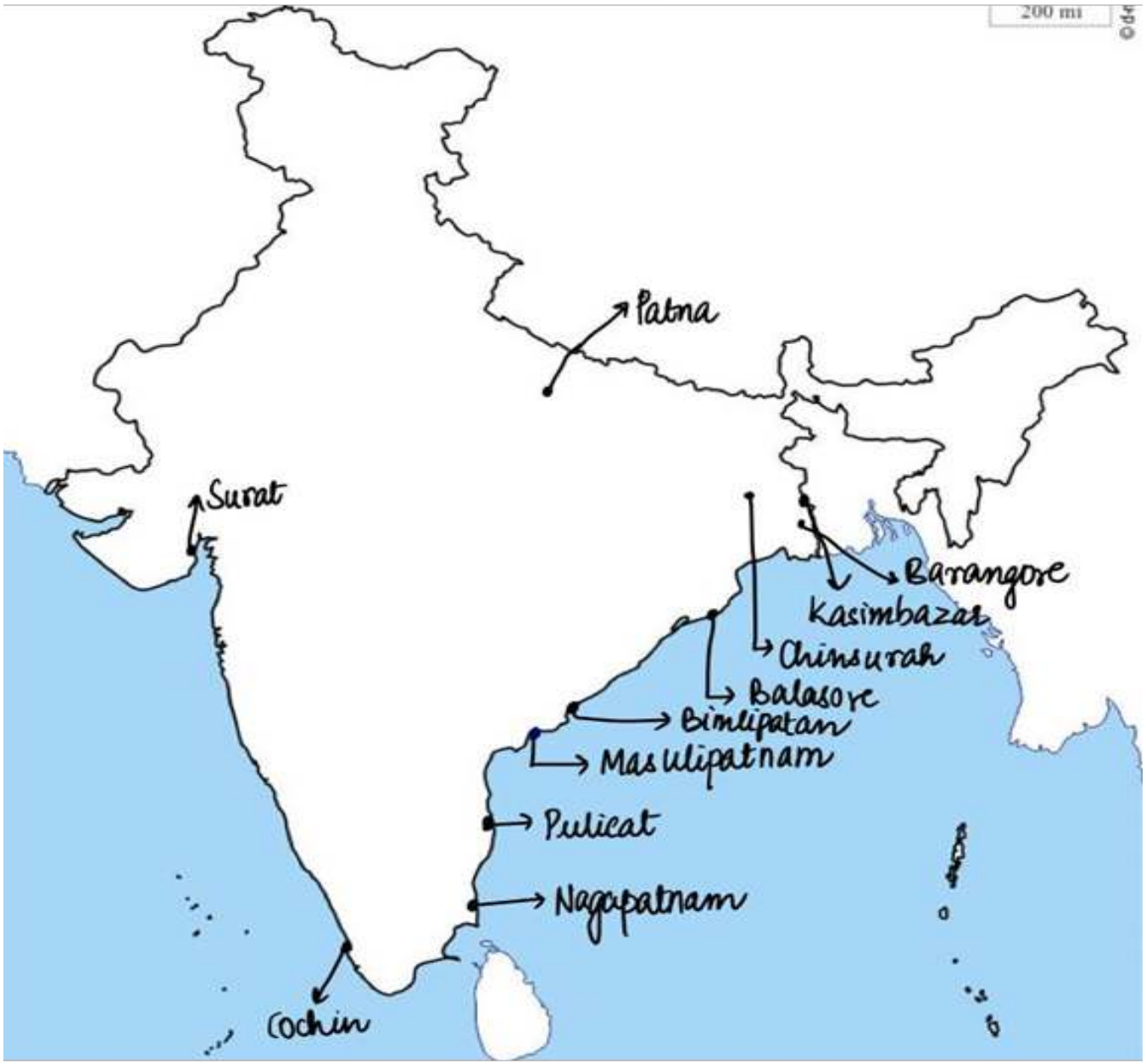

पतन

- **इंडोनेशिया में वाणिज्यिक हित:** डचों को भारत में साम्राज्य निर्माण में ज्यादा दिलचस्पी नहीं थी; उनकी चिंता व्यापार थी। किसी भी मामले में, उनका मुख्य वाणिज्यिक हित इंडोनेशिया के मसाला द्वीपों में था।
- **एंग्लो-डच युद्ध:** डच एंग्लो-डच संघर्ष हार गए और भारत में पतन के परिणामस्वरूप मलय द्वीपसमूह पर अपना ध्यान केंद्रित किया।
- **बेदरा की लड़ाई (1759):** एक लंबे संघर्ष के बाद, अंग्रेजों ने डचों को हरा दिया।

अंग्रेज

- **लंदन के व्यापारियों की कंपनी ईस्ट इंडीज** में व्यापार करती थी, यह संयुक्त स्टॉक थी जो बाद में ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी बन गई। इसकी स्थापना 1600 में हुई थी।
- **1612 में, मुगल सम्राट जहांगीर** ने इंग्लैंड की रानी एलिजाबेथ प्रथम के प्रतिनिधि राजनयिक सर थॉमस रो को सूरत में एक कारखाना खोलने की अनुमति दी, जिससे ब्रिटिश कंपनी को भारत में अपने पैर जमाने का मौका मिला।

अंग्रेज अन्य शक्तियों के विरुद्ध सफल क्यों हुए?

कूटनीतिक रणनीतियाँ: अंग्रेजों ने भारत के अधिकांश हिस्से पर कब्जा करने के लिए प्रभावी रणनीति के रूप में व्यापगत के सिद्धांत और सहायक गठबंधन का इस्तेमाल किया।

बेहतर हथियार और सेना: कई भारतीय राजाओं ने यूरोपीय हथियार मंगवाए और यूरोपीयों को सैन्य नेता के रूप में नियुक्त किया, लेकिन वे अंग्रेजों की तरह प्रभावी सैन्य योजनाएँ विकसित करने में असमर्थ थे।

राष्ट्रीय गौरव और एकता की कमी: अंग्रेजों ने भारतीय शासकों की इस कमजोरी का कुशलतापूर्वक उपयोग गृह युद्ध को भड़काने के लिए किया।

मजबूत वित्तीय शक्ति: अंग्रेजों के पास अपने शेयरधारकों को लाभांश देने के लिए पर्याप्त संसाधन थे, जिसने उन्हें भारत में अंग्रेजी युद्धों को निधि देने के लिए मजबूर किया। इसके अतिरिक्त, ब्रिटिश व्यापार ने इंग्लैंड के धन में काफी वृद्धि की।

कर्नाटक युद्ध और ब्रिटिश विजय: कर्नाटक युद्ध और ब्रिटिश विजय के दौरान पुर्तगाली और डच अंग्रेजों के लिए कोई बड़ा खतरा नहीं थे। फ्रांसीसी अंग्रेजों के एकमात्र शक्तिशाली विरोधी थे।

शक्ति का शून्य: मुगल साम्राज्य के कई समर्थकों और विद्रोही नेताओं ने विभिन्न स्थानों पर अपना प्रभुत्व स्थापित किया । परिणामस्वरूप अंग्रेजों को भारत में व्यापार स्थापित करने का मौका मिला।

नेतृत्व: रॉबर्ट क्लाइव, वॉरेन हेस्टिंग्स, एलफिंस्टन, मुनरो और अन्य ने उत्कृष्ट नेतृत्व क्षमताओं का प्रदर्शन किया। अंग्रेजों को सर आइरे कूट, लॉर्ड लेक, आर्थर वेलेस्ली और अन्य जैसे नेताओं से भी लाभ हुआ।

भारत (गोवा) में पुर्तगाली शासन शेष भारत में ब्रिटिश शासन से किस प्रकार भिन्न था?

पुर्तगाली	अंग्रेज़
• **कैथोलिक धर्म:** उनका शासन कैथोलिक धर्म से प्रेरित था जो ईसाई धर्म का एक रूढ़िवादी रूप है।	• **प्रोटेस्टेंटवाद:** उनका शासन सिद्धांततः प्रोटेस्टेंटवाद पर आधारित था।
• **रूढ़िवादी:** पुर्तगालियों ने गोवा पर बहुत लंबे समय तक - 1510 से शुरू होकर लगभग 450 वर्षों तक शासन किया और यह 1961 तक जारी रहा। पुर्तगाली गोवा में, समय अवधि के दौरान बहुत सारे सामाजिक और आर्थिक परिवर्तन हुए।	• **सुधारात्मक:** इस तथ्य के कारण कि ब्रिटिश शासन ज्ञानोदय के बाद आया था, इसकी पुर्तगाली शासन से तुलना करना कठिन है, क्योंकि 200 वर्ष का समय नैतिक विकास के लिए पर्याप्त समय है और ज्ञानोदय के उदारवादी प्रभाव के कारण यह सामान्य रूप से ईसाई धर्म के लिए भी महत्वपूर्ण समय था।
• **धार्मिक नीति:** गोवा में मंदिरों को नष्ट कर दिया गया। केरल में सीरियाई ईसाइयों और गौड़ सारस्वत ब्राह्मणों को धर्म परिवर्तन के लिए राजी किया गया। संस्कृतियों के खिलाफ नरसंहार व्यापक था।	• **विशुद्ध रूप से वाणिज्यिक नीति:** ब्रिटिश शासन का अंतिम उद्देश्य लाभ कमाना था जो पूंजीवाद का मूल सिद्धांत था। इस प्रकार वे उपनिवेशवाद के वाणिज्यिक पहलू पर पूरी तरह निर्भर थे।
• **तटीय शक्ति:** अच्छी समुद्री नौसेना के कारण पुर्तगाली मुख्य रूप से तटीय भाग के आसपास केंद्रित थे।	• **महाद्वीपीय शक्ति:** उन्होंने कूटनीतिक और सैन्य सफलता के आधार पर संपूर्ण मुख्य भूमि भारत पर उपनिवेश स्थापित करने पर ध्यान केंद्रित किया।

फ़्रांसीसी

फ्रांसीसी ईस्ट इंडिया कंपनी की स्थापना 1664 में लुई XIV के मंत्री कोलबर्ट ने की थी, जिन्होंने इसे भारतीय और प्रशांत महासागर में फ्रांसीसी व्यापार पर 50 साल का एकाधिकार भी दिया था।

भारत में बस्तियाँ: सूरत, मसूलीपट्टनम, चंद्रनगर, पांडिचेरी

दक्षिण भारत में एंग्लो-फ्रेंच संघर्ष

प्रथम कर्नाटक युद्ध (1740-48):

- **कारण:** यह ऑस्ट्रियाई उत्तराधिकार युद्ध, यूरोप में एंग्लो-फ्रेंच संघर्ष का परिणाम था
- **संधि:** ऐक्स-ला चैपल की संधि, 1748
- **महत्व:**
  - अंग्रेजों को मद्रास वापस दे दिया गया, जबकि फ्रांसीसियों को बदले में उत्तरी अमेरिका में उनकी संपत्ति प्राप्त हुई।
  - यह संघर्ष सेंट थोम (मद्रास में) की लड़ाई के लिए प्रसिद्ध है, जिसमें फ्रांसीसियों ने अनवर-उद्दीन की सेना, कर्नाटक के नवाब और एक अंग्रेजी सहयोगी के खिलाफ़ लड़ाई लड़ी थी।

द्वितीय कर्नाटक युद्ध (1749-54):

- **कारण:** फ्रांसीसी और अंग्रेजों ने क्षेत्रीय राजवंशीय संघर्षों का उपयोग काल्पनिक युद्धों के लिए मोर्चों के रूप में किया।
- **संधि:** 1755 में पांडिचेरी की संधि
- **महत्व:** हालाँकि लड़ाई अभी तक अनसुलझी थी, लेकिन इसने दक्षिण भारत में अंग्रेजों पर फ्रांसीसी प्रभाव को क्षीण कर दिया और परिणामस्वरूप फ्रांस को डुप्लेक्स को वापस बुलाना पड़ा।

तृतीय कर्नाटक युद्ध (1758-63):

- **पृष्ठभूमि:** यूरोपीय सात वर्षीय युद्ध (1856-1863)।
- **भारत में युद्ध का क्रम:**
  - 1758 में फ्रांसीसी सेना ने अंग्रेजी किलों पर कब्ज़ा कर लिया था। फ्रांसीसी बेड़े को अंग्रेजों के हाथों भारी नुकसान उठाना पड़ा।
  - अंग्रेज जनरल आइरे कूट ने आर्थर डी लैली के नेतृत्व वाली फ्रांसीसी सेना को पूरी तरह से नष्ट कर दिया और बुस्सी पर कब्जा कर लिया।
  - तमिलनाडु में एक महत्वपूर्ण संघर्ष वांडी वाश की लड़ाई (1760-61) के लिए प्रसिद्ध है।
- **संधि:** पेरिस की संधि 1763
  - महत्व: फ्रांसीसी को केवल व्यापारिक उद्देश्यों के लिए भारतीय शहरों का उपयोग करने की अनुमति थी; समुदायों की किलेबंदी की अनुमति नहीं थी।
  - वांडीवाश में जीत के बाद, अंग्रेजी ईस्ट इंडिया कंपनी का भारत में कोई यूरोपीय विरोधी नहीं था।

असफलता के कारण

अंग्रेजों की नौसेना शक्ति:	भारत में अंग्रेजों की नौसेना की उपस्थिति मजबूत थी, जिससे उन्हें फ्रांसिसियों पर बढ़त मिली।
घरेलू सरकार पर निर्भर:	अंग्रेजी ईस्ट इंडिया कंपनी के विपरीत फ्रांसीसी ईस्ट इंडिया कंपनी एक राज्य कंपनी थी जो हर चीज के लिए घरेलू सरकार पर निर्भर थी।
निजी व्यापार:	वायसराय और उनके अधीनस्थ अक्सर निजी व्यापार, तस्करी, दास व्यापार आदि में संलिप्त रहते थे, जिसने फ्रांसीसी शक्ति के पतन में महत्वपूर्ण योगदान दिया।
अंग्रेजों की तरह बंगाल के संसाधनों तक पहुँचने में असमर्थ:	बंगाल की प्रचुर संपत्ति ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के लिए सुलभ थी जिससे वे फ्रांसीसियों से अधिक शक्तिशाली हुए थे।
भारतीय राजकुमार की आंतरिक राजनीति में डुप्लेक्स का हस्तक्षेप:	इसका फ्रांसीसी कंपनी के व्यापारिक संचालन पर प्रभाव पड़ा। डुप्लेक्स मानते थे कि भारतीय वाणिज्य विफल हो गया है। हालाँकि, अंग्रेजों ने कभी भी एक वाणिज्यिक निकाय के रूप में अपने गठन को नहीं भुलाया।

Notes:

अध्याय - 1

1. हुगली का उपयोग बंगाल की खाड़ी में समुद्री डकैती के लिए आधार के रूप में किया गया था:

(a) पुर्तगालियों द्वारा (b) फ़्रांसीसी लोगों द्वारा
(c) डेनमार्किंयों द्वारा (d) ब्रिटिशों द्वारा

2. भारत में "कार्टाज़ प्रणाली - समुद्री डकैती से सुरक्षा" निम्नलिखित में से किस औपनिवेशिक शक्ति द्वारा शुरू की गई थी?

(a) पुर्तगाली (b) डच
(c) फ्रेंच (d) अंग्रेजी

3. भारत में फ्रांसीसी बस्ती कौन सी नहीं थी?

(a) माहे (b) कराईकल
(c) चंदननगर (d) कोलकाता

4. 1510 में बीजापुर के सुल्तान से गोवा किसने छीन लिया?

(a) एंटोनियो डी'अब्रू
(b) ट्रिस्टो दा कुन्हा
(c) अफोंसो डी अल्बुकर्क
(d) उपरोक्त में से एक से अधिक

5. निम्नलिखित में से किस स्थान पर डचों ने भारत में अपने व्यापारिक केंद्र स्थापित किए?

(a) नागपट्टिनम, चिनसुरा, मछलीपट्टनम
(b) सूरत, भरूच, आगरा
(c) कोचीन, अहमदाबाद, पटना
(d) उपरोक्त सभी

6. पांडिचेरी (अब पुडुचेरी) के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. पांडिचेरी पर कब्ज़ा करने वाली पहली यूरोपीय शक्ति पुर्तगाली थी।
2. पांडिचेरी पर कब्ज़ा करने वाली दूसरी यूरोपीय शक्ति फ्रांसीसी थी।
3. 'अंग्रेजों' ने कभी पांडिचेरी पर कब्ज़ा नहीं किया।

उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं? (IAS 2010)

(a) केवल 1 (b) केवल 2 और 3
(c) केवल 3 (d) 1, 2 और 3

7. निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. रॉबर्ट क्लाइव बंगाल के पहले गवर्नर जनरल थे।
2. विलियम बेंटिक भारत के पहले गवर्नर जनरल थे।

उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं? (IAS 2007)

(a) केवल 1 (b) केवल 2
(c) दोनों 1 और 2 (d) न तो 1 और न ही 2

8. निम्नलिखित में से कौन सा 18वीं शताब्दी में भारत में लड़ी गई लड़ाई का सही कालानुक्रम है? (IAS 2005)

(a) वांडिवाश की लड़ाई - बक्सर की लड़ाई - अम्बुर की लड़ाई - प्लासी की लड़ाई।
(b) अम्बुर की लड़ाई - प्लासी की लड़ाई - वांडिवाश की लड़ाई - बक्सर की लड़ाई।
(c) वांडिवाश की लड़ाई - प्लासी की लड़ाई - अम्बुर की लड़ाई - बक्सर की लड़ाई।
(d) अम्बुर की लड़ाई - बक्सर की लड़ाई - वांडिवाश की लड़ाई - प्लासी की लड़ाई।

9. निम्नलिखित कथनों पर विचार करें। (2011)

1. मृदा की प्रकृति और फसलों की गुणवत्ता के आधार पर भूमि राजस्व का आकलन।
2. युद्ध में तोपों का उपयोग।
3. तंबाकू और लाल मिर्च की खेती।

उपरोक्त में से कौन सा/से भारत में अंग्रेजों द्वारा लाया गया/ गए था/ थे?

(a) केवल 1 (b) 1 और 2
(c) 2 और 3 (d) इनमें से कोई नहीं

10. सत्रहवीं शताब्दी की पहली तिमाही में, निम्नलिखित में से कहाँ अंग्रेजी ईस्ट इंडिया कंपनी का कारखाना/कारखाने स्थित थे? (2021)

1. ब्रोच
2. चिकाकोल
3. त्रिचिनोपोली

निम्नलिखित कूट का उपयोग कर सही उत्तर चुनें।

(a) केवल 1 (b) 1 और 2
(c) केवल 3 (d) 2 और 3